भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur
An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए ०३ सितम्बर से ०९ सितम्बर २०२६ तक तेरहवी साप्ताहिक सलाह

☐.मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें**: फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें**: थ्रिप्स, चेपा, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।

- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मुलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभीउपयोगकरें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

ब. स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त							सितम्बर				
		25	26	27	28	29	30	31	02	03	04	05	06
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0.2	0.8	0.4	2.3	5.7
	जींद								0.2	1.8	0.9	6.7	10
	सिरसा								0.8	0.4	0.2	2.2	3.2
	रोहतक	0.9	0	0	0	0	0	0	0.1	2.8	1.7	4.9	9.1
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल डोडे (गुलर) बनने से लेकर डोडे खुलने तक 98 से 133 दिन कि हैं। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान निराई, कीटनाशक छिड़काव, पर्णीय छिड़काव और सिंचाई की गई। अधिकांश खेतों में मोथा, संथी और मकरा जैसे खरपतवार फैले हुए हैं। 13:00:45 की दर से 2 किलो प्रति एकड़ की दर से पर्णीय छिड़काव किया गया। कई खेतों में सफेद मक्खी आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से अधिक पाई गई, साथ ही शहद की ओस और कालिमा फफूंदी के लक्षण भी दिखाई दिए। आर्थिक सीमा के निकट कई खेतों में हरी डोडोंमें गुलाबी सुंडी का प्रकोप देखा गया। कुछ खेतों में डोडों में सड़न के साथ-साथ कपास पत्ती मोड़ विषाणु रोग की गंभीरता कम पाई गई। कुछ खेतों के कुछ हिस्सों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई। किसानों ने तनाव के कारण खुल चुकी कपास की तुड़ाई शुरू कर दी है।

सिरसा में, फसल 107 से 127 दिन कि है और अब इसमें डोडे बनने और विकसित होने की अवस्था में है। सिंचाई के साथ-साथ नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक की विभाजित खुराक दी गई और जहां फसल की ऊपरी परत उपयुक्त थी, वहां हाथ से निराई की गई। कीटों और रोगों के नियंत्रण के लिए कीटनाशक का छिड़काव किया गया और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्णीय छिड़काव भी किया गया। कपास के खेत में कुछ स्थानों पर खरपतवारों का प्रकोप देखा गया, जिससे पौधों की संख्या कम हो गई। तेला की संख्या तीन पत्तियों पर 3-15 के बीच थी, सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से ऊपर बढ़कर तीन पत्तियों पर 14-41 के बीच हो गई और थ्रिप्स की संख्या आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से ऊपर तीन पत्तियों पर 1-27 निम्फ और वयस्क के बीच थी। आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर से ऊपर गुलाबी सुंडी का प्रकोप भी देखा गया, जिससे 5-20% हरे डोडों को नुकसान पहुंचा।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास की फसल में सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। फल लगने की चरम अवस्था के दौरान 13:00:45 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से 7 से 10 दिनों के अंतराल पर पर्णीय छिड़काव करें। उचित वृद्धि के लिए आवश्यकतानुसार 2.0% यूरिया और 0.5% जिंक सल्फेट 21% का पर्णीय छिड़काव भी किया जा सकता है। उपयुक्त अवस्था में ट्रैक्टर से यांत्रिक निराई करें और उसके बाद कसौले से हाथ से निराई करें। रस चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर को पार कर रही है, इसलिए 20 पौधे प्रति एकड़ पर रस चूसने वाले कीटों (थ्रिप्स, सफेद मक्खी और तेला) की निगरानी करना आवश्यक है। तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए 80 ग्राम प्रति एकड़ फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी और 400 मिलीलीटर एफिडोपायरोपेन 50 जी/एल डीसी का छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी का संक्रमण मध्यम से उच्च स्तर का हो और उसमें निम्फ की संख्या अधिक हो, तो पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी @ 400 मिली या स्पाइरोमेसिफेन 240 एससी @ 240 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। कीटनाशकों को टैंक में मिलाकर छिड़काव न करें। गुलाबी सुंडी का संक्रमण दिखने लगे तो प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएं। प्रति एकड़ कम से कम 100 फूल या 20 हरे डोडों की जांच करें ताकि गुलाबी सुंडी के संक्रमण का पता चल सके। फूल आने की शुरुआती अवस्था में संक्रमित और सुंडी प्रभावित फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। यदि फूल/डोडों का संक्रमण आर्थिक दृष्टी से हानिकारक स्तर (>5%) से अधिक हो जाए, तो इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिली प्रति एकड़ या क्विनालफोस 20 एएफ @ 800 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद किसी वैकल्पिक कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझान से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित जड़ों को कार्बेन्डाजिम 50 WP @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी से अच्छी तरह भिगो दें। यदि परविल्ट दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम प्लस यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार भिगो दें। नमी पूरी तरह सूखने के बाद तनावग्रस्त, अच्छी तरह से खिले हुए डोडों से कपास चुन लें। डोडों में सड़न के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी @30 ग्राम का पर्णीय छिड़काव करें, इसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी @25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी @ 10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिलीलीटर को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें, विशेष रूप से फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। यदि कालिमायुक्त फफूंद विकसित हो जाए, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाजोल 25%ईसी @10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50%डब्लूपी @ 25 ग्राम/10 लीटर (1250 ग्राम/हेक्टेयर) के 1-2 निवारक/उपचारात्मक स्प्रे करें।

सिरसा में किसानों को आवश्यकतानुसार खेतों की सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए कुदाल/खुरपा से निराई-गुड़ाई करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी मैन्युअल रूप से और/या 8-10 पीले चिपचिपे जालों का उपयोग करके प्रति एकड़ की दर से करते रहें और खेत की मेड़ों और आसपास के क्षेत्रों को सफेद मक्खी के अन्य वैकल्पिक मेजबान पौधों से मुक्त रखें।तेला और थ्रिप्स जैसे अन्य चूसने वाले कीटों की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 20 पौधों का निरीक्षण करें और प्रत्येक पौधे की तीन पत्तियों के नीचे से भी निरीक्षण करें। सफेद मक्खी के वयस्कों को नियंत्रित करने के लिए, 150 लीटर पानी में 60 ग्राम डिनोटेफुरान 20 एसजी, 80 ग्राम फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी, 400 मिलीलीटर एफिडोपायरोपेन 50 जी/लीटर, 200 ग्राम डायफेंथियूरॉन 50 डब्ल्यूपी (जहां सिंचाई या वर्षा के कारण पर्याप्त नमी हो), या 500 मिलीलीटर प्रोफेनोफोस 50 ईसी प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।यदि पत्तियों पर चिपचिपी, चमकदार और तैलीय सफेद मक्खी के निम्फ अधिक मात्रा में दिखाई दें, तो वयस्क मक्खियों को नियंत्रित करने के लिए छिड़काव के 3-5 दिन बाद 150-200 लीटर पानी में 500 मिलीलीटर पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी या 400 मिलीलीटर बुप्रोफेज़िन 25 एससी या 240 मिलीलीटर स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी प्रति एकड़ का छिड़काव करें। कालिमायुक्त फफूंद की स्थिति में, 10-15 दिनों के अंतराल पर एक या दो बार 1 मिलीलीटर/लीटर प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी या 2.5 ग्राम/लीटर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50 डब्ल्यूपी का छिड़काव करें। जैसिड कीटों के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए, जहां भी इनकी संख्या ETL (2 निम्फ/पत्ती) से अधिक हो, वहां 150 लीटर पानी में 300-400 मिलीलीटर की दर से टोल्फेनपाइराड 15 EC, 300 मिलीलीटर की दर से फेनपाइरोक्सिमेट 5 EC, या 60 ग्राम/एकड़ की दर से डिनोटेफुरान 20 SG का प्रयोग करें। सफेद मक्खी की संख्या की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे जाल लगाएं। थ्रिप्स और गुलाबी सुंडी की प्रारंभिक बढ़ती संख्या को नियंत्रित करने के लिए, 5% नीम के बीज के अर्क (NSKE) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% EC) को 5 मिलीलीटर/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। गुलाबी बॉलवर्म की आबादी को नियंत्रित करने के लिए, इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 100 ग्राम या स्पिनेटोरम 11.7 एससी @ 170 मिलीलीटर या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिलीलीटर प्रति एकड़ का छिड़काव करें और प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी का उपयोग करें। देसी (आर्बोरियम) कपास में 5% फलने वाले भाग को नुकसान (फैले हुए

वर्गाकार या गिरे हुए फलने वाले भागों में) पहुंचाने वाले चित्तीदार सुंडी को 150 लीटर पानी में स्पिनोसाड @ 75 मिलीलीटर/एकड़ का छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है। भारी बारिश और जलभराव की स्थिति में, फसल को नुकसान से बचाने के लिए खेतों से अतिरिक्त पानी निकालने के लिए उचित जल निकासी बनाए रखें। जड़ सड़न और मुरझाने की बीमारी की नियमित रूप से निगरानी करें। शुरुआती लक्षण वाले पौधों और आसपास के पौधों को ट्राइकोडर्मा एसपीपी से अच्छी तरह से उपचारित करें। जड़ सड़न और मुरझाने की बीमारी के प्रबंधन के लिए 1% कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (WP) @ 50 ग्राम या कार्बेन्डाजिम (Carbendazim) 50% WP @ 12 ग्राम/10 लीटर पानी का प्रयोग करें। यदि परविल्ट के लक्षण दिखाई दें, तो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (Copper 50% WP) @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम (Carbendazim) 50% WP @ 120 ग्राम और यूरिया (2 किलो प्रति 100 लीटर पानी) के घोल से 2-3 बार छिड़काव करें। यह छिड़काव लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद (24 घंटे के भीतर) केवल प्रभावित पौधों पर करें। इसके अलावा, कोबाल्ट क्लोराइड @ 10 मिलीग्राम (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) या सोडियम बेंजोएट @ 50 मिलीग्राम (5 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव लक्षणों के प्रकट होने के तुरंत बाद करें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अगस्त							सितम्बर				
		25	26	27	28	29	30	31	02	03	04	05	06
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0.2	0.5	4.4	8.3
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.2	0.2
	नागौर								0	0.2	0.5	1.4	3.5
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.4	1.5
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0.2	2.5
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, फसल फूल आने से डोडे (गुलर) बनने तक की अवस्था में 103 से 119 दिन कि है। हाथ से निराई-गुड़ाई और खरपतवार नियंत्रण तथा अंतर-फसल क्रियाएं की गईं। तेला की संख्या 0.0 से 3.00 प्रति तीन पत्ती, सफेद मक्खी की संख्या 0.00 से 9.00 प्रति तीन पत्ती और थ्रिप्स की संख्या 5.00 से 19.00 प्रति तीन पत्ती के बीच पाई गई।

बांसवाड़ा में, फसल 57 से 63 दिन पुरानी है और वर्गाकारकलि बनने, फूल आने और डोडे बनने की अवस्था में है। खेत साफ-सुथरे हैं। रस चूसने वाले कीटों के लिए समय पर छिड़काव किया गया है। खरपतवारों का कोई प्रकोप नहीं है। रस चूसने वाले कीटों में, सफेद मक्खी का प्रकोप कपास के खेतों में दिखना शुरू हो गया है, लेकिन यह आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक स्तर से नीचे है। कोई रोग नहीं है।

सलाह:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में किसानों को 2% KNO3 का पर्णीय छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। कपास के खेतों के आसपास और चारों ओर से खरपतवार हटा दें। फसल में कीटों और रोगों की नियमित निगरानी करें। पिछले वर्ष जिन स्थानों पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप पाया गया था, उन स्थानों पर इस वर्ष भी गुलाबी सुंडी के प्रकोप की गहन निगरानी आवश्यक है। गुलाबी सुंडी की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाएं। यदि 100 फूलों में से 5 से अधिक फूलों पर सुंडी से प्रभावित जैसी संरचना दिखाई दे या डोडों पर 5% से अधिक कीटों का संक्रमण हो, तो प्रोफेनोफोस 50% ईसी @ 2.5 मिली/लीटर या इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @ 0.50 ग्राम/लीटर या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी @ 1.0 मिली/लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें।तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 0.40

ग्राम/लीटर या एफिडोपायरोपेन 50 डीसी @ 1.50 मिली/लीटर पानी में मिलाकर या थियामेथॉक्सम 24 डब्ल्यूजी @ 0.5 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें, जबकि सफेद मक्खी के निम्फ की स्थिति में पाइरिप्रॉक्सीफेन 10% ईसी @ 2.5 मिली/लीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी @ 1.25 मिली/लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। यदि थ्रिप्स का संक्रमण आर्थिक दृष्टि से हानिकारक स्तर से अधिक हो, तो स्पिनेटोरम 11.7 SC को 0.84 मिली/लीटर या प्रोफेनोफोस 50 EC को 2.5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। यदि कालिमायुक्त फफूंद विकसित हो जाए, तो प्रोपिकोनाजोल 25%EC को 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50%WP को 25 ग्राम/10 लीटर (1250 ग्राम/हेक्टेयर) की दर से 10-15 दिनों के अंतराल पर 1-2 बार निवारक/उपचारात्मक स्प्रे करें।

बांसवाड़ा में, बारिश के पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए किसानों को अपने खेतों में उचित जल निकासी व्यवस्था बनाने की सलाह दी जाती है। यदि मिट्टी नम हो और हाथ से खरपतवार निकालना संभव न हो, तो घास वाले खरपतवारों के लिए क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी, या चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी, या घास और चौड़ी पत्ती वाले दोनों प्रकार के खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी जैसे खरपतवारनाशकों का प्रयोग करें। कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण के किसी भी लक्षण के लिए लगातार निगरानी करते रहें। यदि रसचू सने वाले कीटों की संख्या निर्धारित सीमा से अधिक हो जाए, तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) का छिड़काव 5 मिली/लीटर पानी की दर से करें। सफेद मक्खी और जैसिड को नियंत्रित करने के लिए 8-10 पीले चिपचिपे जाल प्रति एकड़ लगाएं। यदि रस चूसने वाले कीटों की संख्या निर्धारित सीमा से अधिक हो जाए, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुपरफेज़िन 25 ईसी @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफेंथियूरॉन 50 डब्ल्यूपी @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी @ 200 ग्राम/हेक्टेयर। गुलाबी बॉलवर्म के लिए फेरोमोन जाल (5/हेक्टेयर) लगाएं। गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की नियमित रूप से निगरानी करें और प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को इल्लियों सहित नष्ट कर दें।

MADHYA PRADESH		Actual Rainfall in last week(mm)							Predicted Rainfall in next week (mm)				
		अगस्त							सितम्बर				
		25	26	27	28	29	30	31	02	03	04	05	06
	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	0.7	0.6	13	14.9	10.2
	धार	0	0	0	0	0	0	0	1.1	0.7	9.5	13.5	14.7
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	1.2	2.2	25	22.9	9.3
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

<u>फसल की स्थिति</u>:

खंडवा में बोई गई फसल 49 से 97 दिन की है और वानस्पतिक अवस्था से लेकर डोडे (गुलर) बनने की अवस्था तक पहुँच चुकी है। आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई, उर्वरक और सिंचाई की गई है। खेतों में मौसमी खरपतवार जैसे कि साइनोडोन डैक्टिलोन, साइपरस रोटंडस, आर्गेमोन मैक्सिकाना और फाइलेन्थस निरूरी फैले हुए हैं। कुछ खेतों में तेला, चेपा और सफेद मक्खियों का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी भी प्रकार की रोग की सूचना नहीं मिली है।

<u>सलाह:</u>

खंडवा में किसानों को खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी जाती है। यदि मिट्टी नम हो और हाथ से खरपतवार निकालना संभव न हो, तो घास वाली खरपतवारों के लिए क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी की दर से या चौड़ी पत्ती वाली खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.5 मिली/लीटर पानी की दर से या घास और चौड़ी पत्ती वाली दोनों प्रकार की खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% एमईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी की दर से खरपतवारनाशक का प्रयोग करें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रैप लगाएं। 10 से 15 सेंटीमीटर की गहराई पर कॉलम विधि से 25% नाइट्रोजन की विभाजित खुराक दें। रस चूसने

वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए NSKE 5% + नीम का तेल 5 मिली/लीटर या नीम के तेल पर आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500 पीपीएम) 5 मिली/लीटर + 1.0 ग्राम कपड़े धोने के डिटर्जेंट इमल्शन का प्रयोग करें। यदि पैराविल्ट रोग दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक-एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 100 ग्राम और यूरिया 2 किलोग्राम प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार सिंचाई करें। लंबे समय तक सूखे की स्थिति में, डोडे लगने की चरम अवस्था के दौरान 7 से 10 दिनों के अंतराल पर 13:00:45 @ 2 किलोग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर पर्णीय छिड़काव करें। यदि वर्गाकार कलि का पौधे से गिरना दिखाई दे, तो कपास के कलि और फूलों के प्राकृतिक रूप से झड़ने से बचने के लिए NAA @ 4 मिलीलीटर /10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट)https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:
Dr. Vijay N. Waghmare
Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:
Dr. G. T. Behere, Dr. A. S. Tayade, Dr. A. H. Prakash, Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain, Dr. Rishi Kumar, Dr. Babasaheb B. Fand, Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P Gawande, Dr. Shivaj Thube, Dr. R.R. Chapke

Regional language translation:
Hindi : Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi : Dr Amarpreet Singh
Tamil : Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu : Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi : Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati : Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya : Dr B. S. Nayak
Kannada : Dr Neelkanth Hiremani